टिप्पणी

6

मुग़लों की सैन्य व्यवस्था

आपने पिछले पाठ में पढ़ा है कि दिल्ली के मुस्लिम शासक, जो स्वयं को सुल्तान कहते थे 'खलीफा' को सर्वोच्च शक्ति मानते थे। परंतु मुगलों के सत्ता में आने के बाद उन्होंने 'खलीफा' को सर्वोच्च न मानते हुए खुद को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।

इस समय की एक अन्य महत्वपूर्ण घटनाक्रम में यूरोपीय व्यापारी कंपनियों ने भारत में स्वयं को स्थापित करना शुरू किया। पुर्तगाली, डच, डेनिश, अंग्रेज तथा फ्रांसीसी सभी भारत में व्यापारी बनकर आए किन्तु औरंगजेब के समय तक स्वयं को आगे नहीं बढ़ा पाए। आप इस पाठ में जानकारी प्राप्त करेंगे कि औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् सिंहासन लगभग खाली हो गया। इसलिए कहा जाता है कि मुगलों के आगमन के साथ, भारतीय इतिहास में एक नया युग शुरू हुआ।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- मुगल साम्राज्य की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- मुगल सैन्य संरचना की व्याख्या कर सकेंगे।

6.1 मुगल साम्राज्य का अवलोकन

मध्य एशिया के मुगलों ने 300 से अधिक वर्षों (1526 से 1857 ई.) तक भारत पर शासन किया अर्थात् 1857 में अंतिम मुगल शासक का सिंहासन से हटाने तथा ब्रिटिश शासन की स्थापना तक। इन 300 वर्षों में सैन्य क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए। इस संदर्भ में हमें मुगलों द्वारा लड़े गए युद्धों के वर्णन से जानकारी मिलती है। मुगल साम्राज्य की स्थापना किसने की? वे भारत कैसे आए? उनके प्रमुख शासक कौन थे? इन सभी प्रश्नों के उत्तर यहां दिए गए हैं।

मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर द्वारा की गयी थी। उसने खुद को काबुल में स्थापित किया और फिर खैबर दर्रा के रास्ते उसने अफगानिस्तान से भारत पर आक्रमण किया।

हरियाणा में स्थित पानीपत में बाबर ने दिल्ली के अंतिम सुल्तान इब्राहिम लोधी की बड़ी सेना को परास्त किया। आप जानेंगे कि बाबर ने इसी प्रकार दो अन्य निर्णायक युद्ध लड़े। बाबर ने राजपूतों के साथ युद्ध किया जिनका नेतृत्व मेवाड़ के राणा सांगा ने किया था। 1529 में अफगानों के साथ गंगा के मैदान में युद्ध किया। 1530 में बाबर की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य पूरे उत्तरी भारत में सिंधु नदी से लेकर पूर्व दिशा में बिहार तक तथा उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में ग्वालियर तक फैला हुआ था।

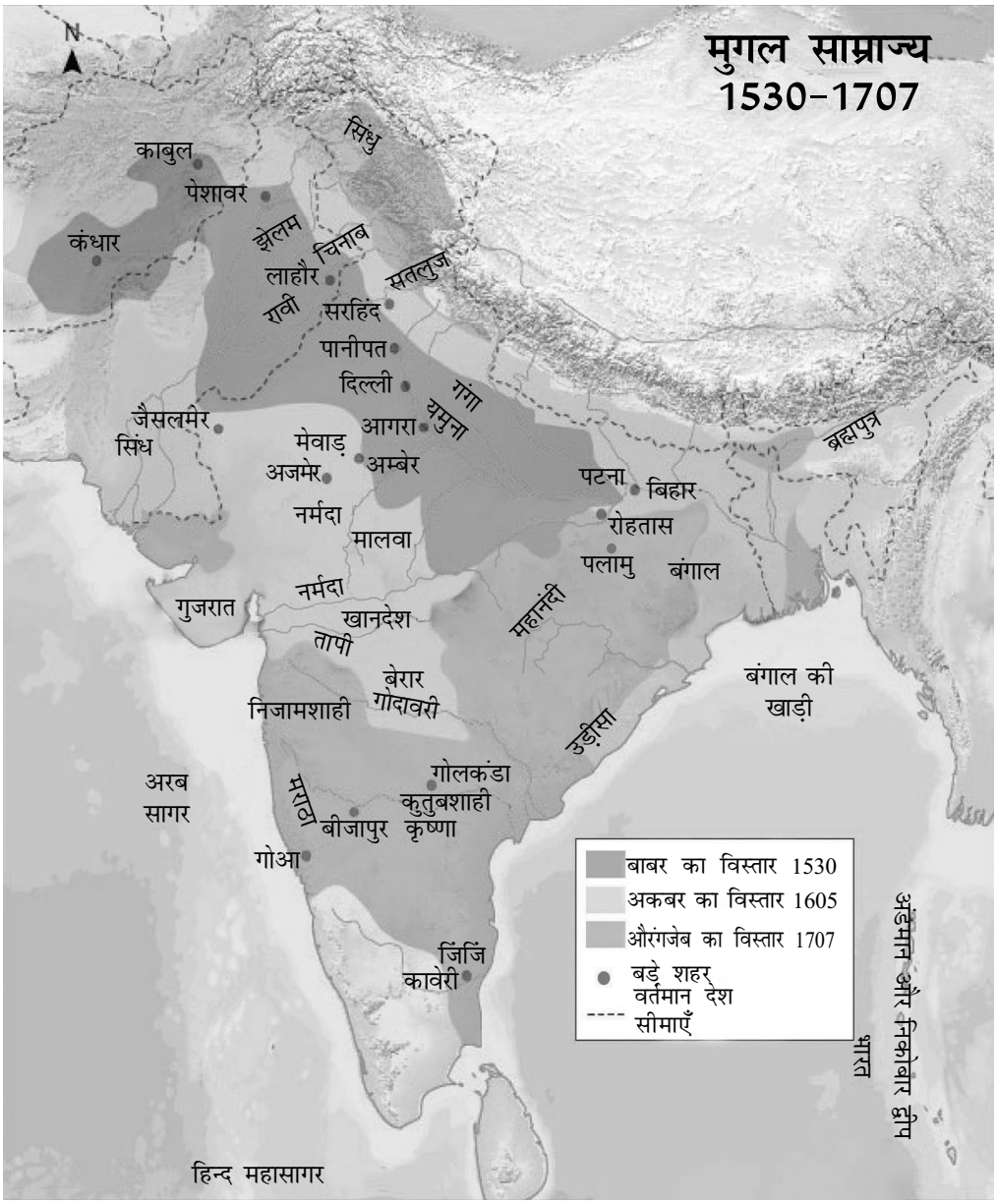

मानचित्र 6.1 मुगल साम्राज्य

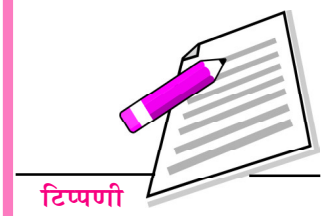

बाबर के पश्चात् उसका पुत्र हुमायूं शासक बना। वह 1530 में सिंहासन पर बैठा परंतु 10 वर्ष की लघु अवधि में अफगान विद्रोहियों ने उसको भारत से भगाकर फारस भेज दिया था। परन्तु हुमायूं 1555 में फारस से भारत में दोबारा वापिस आया।

मुगल राजवंश का अन्य प्रमुख शासक अकबर था जिसने 1556 में बैरम खान के प्रशासन के अंतर्गत सिंहासन की स्थापना की। अकबर के शासन काल में मुगलों का भारत पर अधिकतम राजनीतिक प्रभाव पड़ा। अकबर ने अपने पीछे एक विश्वसनीय राजनीतिक, प्रशासनिक तथा सैन्य संरचना वाला राज्य छोड़ा।

अकबर के पुत्र जहांगीर को अपने पिता की प्रशासनिक प्रणाली तथा प्रजा के प्रति उनकी सहिष्णु नीति दोनों विरासत में मिली परंतु उसने राज्य के मामलों की उपेक्षा की तथा विरोधी दरबारियों के प्रभाव में आ गया। उसका शासन लंबे समय तक नहीं रहा और उसके पुत्र शाहजहां के पास चला गया, जिसने 1628 में सत्ता संभाली। शाहजहां के काल में राज्य की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। राज्य में राजस्व की भारी कमी थी दूसरी ओर दरबार का खर्च राजस्व से अधिक था जिसे पूरा देश स्पष्ट देख रहा था। बाद में शाहजहां की बीमारी के कारण 1658 में उसका ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह शासक बना। शाहजहां का छोटा पुत्र औरंगजेब दारा शिकोह की हत्या करके मुगल साम्राज्य का छठा सम्राट बन बैठा। यद्यपि औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार किया किन्तु वह अपनी धार्मिक असहिष्णुता के कारण साम्राज्य नहीं संभाल सका।

'केसर-ए-हिंद' बहादुर शाह जफर, आखिरी मुगल शासक था जिनके नेतृत्व में 1857 की क्रांति हुई। इसी कारण उन्हें अंग्रेजों ने निष्कासित कर दिया था।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. बाबर के बाद कौन-से मुगल शासक थे। किन्हीं तीन के नाम लिखिए।

2. पानीपत का प्रथम युद्ध कब हुआ था?

3. औरंगजेब के साम्राज्य के कमजोर पड़ने का कारण क्या था?

6.2 मुगल सैन्य संरचना

मध्य एशिया से आने के कारण मुगल वहां की सैन्य परंपरा को अपने साथ लाए थे। बारूद के आगमन के कारण युद्ध की एक नई शैली को अपनाया गया तथा इसके साथ ही नई तरह की रणनीति भी लागू की गई। मुगलों से पहले ऐसा नहीं था, तब युद्ध घुड़सवार, हाथी सवार, तीर-कमान, तलवारों तथा ढालों पर केन्द्रित था। मुगलों के आने के बाद बारूद, मस्कट, बाम्ब

तथा तोप भी सैन्य नीति में शामिल हो गए। इसका अर्थ यह नहीं है कि पुराने हथियारों को पूरी तरह से बदल दिया गया था। वास्तव में नए हथियार, पुराने हथियारों विशेष रूप से तोपखाने के पूरक थे।

इसने युद्ध भूमि में यूनिटों की तैनाती, युद्ध के मैदान में पैदल सेना, घुड़सवार सेना और तोपखाने की स्थिति तथा उन्हें कैसे तैनात किया जाए, के बारे में रणनीतिक बदलाव किए। केवल सैन्य रणनीति को अपनाने के तरीकों में ही परिवर्तन किए गए थे बल्कि इन सैन्य यूनिटों के रख-रखाव के तरीकों में भी परिवर्तन नहीं किए गए थे। नागरिक प्रशासनिक संस्थानों के साथ नए संगठन बनाए गए।

जहां तक संरचना का प्रश्न है मुगल सेना में घुड़सवार सेना, पैदल सेना और तोपखाने शामिल थे। इनमें से तोपखाने ने पैदल सेना तथा घुड़सवार सेना की तुलना में एक अधीनस्थ पद धारण किया। इसके अतिरिक्त हाथियों का प्रयोग भी होता था। मुगलों के समय सेना में घोड़ों की संख्या तथा गुणवत्ता पर ज़ोर दिया गया। हालांकि यह तोपखाना ही था जिसका उपयोग दुश्मन ताकतों को तोड़ने तथा पराजित करने के लिए किया जाता था। पानीपत के पहले युद्ध में भी तोपखाने ने ही इब्राहिम लोधी की सेनाओं को परास्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

(क) **तोपखाना** - सेना की इस शाखा का सामान्य नाम तोपखाना था। बाबर का तोपखाना दो प्रकार का था- भारी व हल्का। हल्की तोपों को बाबर 'कुंडा तोप' कहता था। भारी तोपखाने को 'कज़ान' कहा जाता था जिनके गोलों का वज़न 20-25 पाउंड था जबकि हल्की तोप को 'जर्ब-जान' कहते थे जिसके गोलों का वज़न 3-4 पाउंड होता था। 'कज़ान' बड़ी व भारी तोप होने के कारण किलों के लिए प्रयुक्त होती थी। बड़े तोपों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना कठिन था। इसलिए 'जर्ब-जान' अधिक प्रभावी थी और उसे आसानी से लाया ले जाया जा सकता था।

इसके अलावा 'फिरिंगी' तीसरी तरह की तोप थी जो 'जर्ब-जान' से भी हल्की थी। बाबर के तोपखाने में एक भारी तोप थी जिससे 100 पाउंड या उससे अधिक वज़न के गोले दागे जा सकते थे।

(ख) **हाथी** - मुगल साम्राज्य के पतन से बहुत पहले ही हाथी बोझा ढोने वाले पशु या प्रदर्शन का साधन बनकर रह गए थे और युद्ध में उनकी भूमिका बहुत कम हो गई थी। फिर भी अकबर ने युद्ध के मैदान में बड़ी संख्या में हाथियों का उपयोग किया था। अकबर के शासनकाल में, जिस हाथी पर बादशाह सवार होता था उसे खास (विशेष) कहा जाता था तथा अन्य हाथियों को दस, बीस या तीस के समूह में व्यवस्थित किया जाता था जिन्हें 'हलक़' कहा जाता था। हाथियों को समूहों में एकत्रित करके एकल डिवीज़न में गठित किया जाता था।

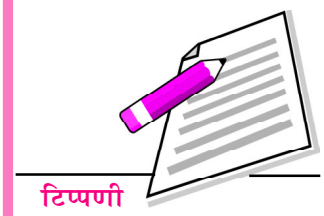

टिप्पणी

(ग) सेना में अनुशासन की बहुत कमी थी। किसी भी भ्रम की स्थिति में मुगल सेना को अनुशासित करना काफी कठिन था। मार्च के दौरान वे जानवरों के अव्यवस्थित झुंड की तरह चलते थे।

मुगल सेना में आक्रमण करने की विस्तृत कार्य प्रणाली थी। 'मीर तुजक' (शाब्दिक अर्थ लार्ड आफ अरेंजमेंट) नामक व्यक्ति को रास्ता चुनने, मार्च करने व आगे बढ़ने, शिविरों को लगाने के लिए स्थान चुनने तथा दुकानों के लिए स्थान चुनने हेतु नियुक्त किया जाता था। इन कार्यों को करने वाले मीर तुजक को आमतौर से 'मीर मंज़िल' कहा जाता था।

(घ) **शिविर** - प्रत्येक सिपाही के पास एक तम्बू होता था। इन शिविरों के द्वार के बाहर एक तरफ हाथी व घोड़े तथा दूसरी ओर तोप व शिकारी बाघ होते थे। भारी तोपों को दूरी पर रखा जाता था तथा वह रास्तों की रक्षा करती थीं।

(ङ) **मार्च** - पहले भारी तोपखाना, पीछे पैदल सेना होती थी जिन्हें अग्रिम पंक्ति कहा जाता था। लड़ाका यूनिट के पीछे। भारी समान ऊंट पर होता था तथा वे शाही खजाना लेकर चलते थे। साथ ही शाही रसोई भी होती थी। इनकी रक्षा हेतु पीछे सेना की तैनाती होती थी।

(च) **उपकरण** - युद्ध क्षेत्र में मुगल विभिन्न प्रकार के हथियार प्रयोग करते थे। हथियारों और कवच को सिलाह (बहुवचन में असलाह) कहा जाता था। इन हथियारों को छोटे शस्त्र और दूर तक आक्रमण के लिए अस्त्रों में विभाजित किया जा सकता है।

6.2.1 छोटे हथियारों के पांच वर्ग होते थे ये निम्न हैं-

1. तलवार व ढाल
2. गदा
3. युद्ध कुल्हाड़ी
4. भाले
5. खंजर

उपरोक्त हथियारों के अलावा मुगल निम्न शस्त्रों का प्रयोग दूर तक आक्रमण करने हेतु ये तीन प्रकार के थे-

1. तीर-कमान
2. बंदूक या तूफांग
3. तमंचा (पिस्तौल)

उपरोक्त तीनों में से तीर-कमान सर्वाधिक प्रचलित थे। इनका प्रयोग मुख्यत: घुड़सवार करते थे जो माने हुए धनुर्धर थे। "तलवार खंजर से बेहतर था, भाला तलवार से बेहतर था और तीर-कमान भाले से बेहतर था।"

तलवार के अनेक भाषाओं में अनेक नाम हैं- तेग़ (अरबी), शमशीर (फारसी) और तलवार (हिंदी)। अरबी शब्द सबसे कम प्रयुक्त किया जाता था। एक अन्य नाम 'सैफ' का भी कभी-कभी प्रयोग किया जाता था। छोटी तलवार को 'नीमच-शमशीर' कहा जाता है। इनके अलावा अनेक उपकरणों का प्रयोग भी किया जाता था। ये निम्न हैं:

- **धूप (असा-शमशीर अर्थात् कर्मचारी तलवार)** - यह सीधी तलवार दखिन से ली गयी थी। ये चौड़ी धार वाली चार फुट लंबी तलवार होती थी। इसको संप्रभुता की निशानी माना जाता था तथा शाही अवसरों पर गौरवपूर्ण तरीके से प्रदर्शित की जाती थी।
- **सिरोही** - ये भारतीय तलवार किसी के सर पर लगने पर सर को धड़ से अलग कर देती थी। शरीर पर लगने से शरीर दो हिस्सों में बंट जाता था।
- **पट्टा** - चपटी धार वाला यह हल्की तलवार की तरह था।
- **गुप्ती** - सीधी तलवार जिसकी म्यान चलने वाली छड़ी होती थी।

तलवार व म्यान की जोड़ी को चिरवाह तथा तिलवाह कहते थे।

गुर्ज या गदा मुगल सेना का प्रमुख हथियार था। युद्ध कुल्हाड़ी (ताबर) एक त्रिकोनी तलवार होती थी जिसकी एक तरफ तेज़ धार होती थी। भाले (Spears) की उत्पत्ति अरबी शब्द सिनान (Sunain) से हुई है। भाले का ऊपरी हिस्सा सुनैन तथा निचला हिस्सा बुनैन कहलाता था। अनेक प्रकार के खंजर जैसे- झामदार, खंजर, कट्टा और पेशकबज़ का मुगल सेना प्रयोग करती थी।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. मुगल सेना की विभिन्न शाखाओं के नाम लिखिए।
2. मुगलों द्वारा उपयोग की जाने वाली तोपों के विभिन्न प्रकार क्या थे?
3. आक्रमण के समय मुग़ल स्वयं को कैसे व्यवस्थित करते थे?
4. मुगलों द्वारा प्रयोग किए गए कुछ हथियारों की सूची बनाइए।

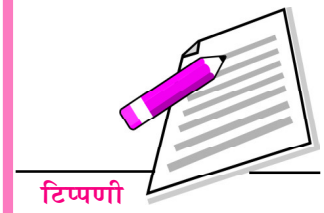

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा

- मुगल मध्य एशिया से आए थे।
- मुगल सेना की परम्पराएं दिल्ली सल्तनत से बेहतर थी जिन्हें उचित रूप से नहीं अपनाया गया था।
- अकबर के शासन काल में मुगल सेना अच्छी तरह संगठित थी तथा शीर्ष पर पहुंच गई थी।
- घुड़सवार मुख्य सेना थी क्योंकि यह कहीं भी आ जा सकती थी।
- पैदल सेना व तोपखाने मुगल सेना के सहायक सेना थी।
- मुगल सेना के तोपखाने की तकनीक और तरीके की कोई बराबरी नहीं कर सकता था।
- अनेक प्रकार के हथियार प्रयोग किए जाते थे तथा अनुशासन सुनिश्चित किया जाता था।

पाठांत प्रश्न

1. मुगल वंश के प्रमुख शासकों के नाम लिखिए।
2. मुगल सैन्य तंत्र को किस प्रकार संगठित किया गया था।
3. मुगलों द्वारा प्रयोग किए गए हथियारों का विवरण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. हुमायुं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब (कोई तीन)
2. अप्रैल 1526 ई.
3. राजनीतिक व धार्मिक असहिष्णुता

टिप्पणी

6.2

1. पैदल सेना, घुड़सवार तोपखाना, हाथी
2. भारी व हल्की तोपें
3. भारी तोपों को पैदल सेना के आगे चलाया जाता था जिसे अग्रिम रक्षक कहा जाता था। इसके उपरांत शाही खजाने का वहन करने वाले ऊंट होते थे। शाही खजाना व शाही रसोई शासक के साथ चलती थी। शेष सेना सबसे अंत में होती थी।
4. तलवार, युद्ध कुल्हाड़ी, गदा, खंजर तथा भाला।